17 SATURDAY
Week 46 ■ 321-044

फणीश्वर नाथ 'रेणु'

फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले में फारबिसगंज के पास औराही हिंगना गाँव में हुआ। उस समय यह पूर्णिया जिले में था। उनकी शिक्षा भारत नेपाल में हुई। प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के

18 SUNDAY

बाद रेणु ने मैट्रिक नेपाल के विराटनगर आदर्श विद्यालय से कोईराला परिवार में रहकर की। इन्होंने प्रवेशिका काशी हिन्दु विश्वविद्यालय से 1942 में की जिसके

19 MONDAY
Week 47 ■ 323-042

बाद वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। बाद में 1950 में उन्होंने नेपाली क्रांतिकारी आंदोलन में भी हिस्सा लिया, जिसके परिणामस्वरूप नेपाल में जनतंत्र की स्थापना हुई। 1952 - 1953 के समय वे भीषण रूप से रोगग्रस्त रहे थे जिसके बाद लेखन की ओर उनका झुकाव हुआ। उन्होंने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी।

इनकी लेखन - शैली ~~वर्णात्मक~~ वर्णनात्मक थी, जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने ~~तरीका~~ तरीके से किया होता था। इनकी लगभग हर कहानी में पात्रों की सोच घटनाओं से प्रधान होती थी।

	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
2018					1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
NOVEMBER	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30								

Scanned with CamScanner

एक आदिम रात्रि की महक इसका एक सुंदर उदाहरण है।

इनकी कहानियों तथा उपन्यासों में आंचलिक जीवन के हर धुन, हर गंध, हर लय, हर ताल, हर सुर, हर सुंदरता और हर कुरूपता को शब्दों में बांधने की सफल कोशिश की है। ग्राम्य जीवन के लोकगीतों का उन्होंने अपना कथा-साहित्य में बड़ा ही सर्जनात्मक प्रयोग किया है।

इनका लेखन प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परम्परा को आगे बढ़ाता है और इन्हें आजादी के बाद का प्रेमचंद की संज्ञा दी जाती है।

Scanned with CamScanner